लक्ष्य पर सम्पूर्ण शक्ति को एकत्र करने पर ही सफलता

पानी को जब तक 212 डिग्री तक गर्म करके भाप न बनाया जाये तब तक इंजन अपनी जगह से हिल नहीं सकता और न ही गाड़ी को खींच सकता है।

इच्छा रखने मात्र से लक्ष्य हासिल नहीं होता। लक्ष्य को पाने के लिए अपनी शक्तियों को पहचानें और समग्र शक्ति लगाकर उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करें। कल पर टालने की आदत के वश न हों। जो अपने लक्ष्य को कल पर डाल देते वे सदा दुर्बल बने रहते।

यहां तक कि 210 डिग्री तक भी गर्म करने से इंजन नहीं चल सकता और न ही गाड़ी खींची जा सकती है। इसी प्रकार अनेक लोग अपने जीवन की गाड़ी को गुनगुने पानी के साथ चलाने की कोशिश करते हैं। बहुत हुआ तो उबलते पानी से चलाने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन फिर भी प्रगति नहीं हो पाती। वे आगे नहीं बढ़ पाते। वास्तव में उनके इंजन में लगे बॉयलर में पानी 200 या 210 डिग्री रह जाती है।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उनका उत्साह कार्य के प्रति उतना तेजस्वी नहीं हो पाता जितना होना चाहिए। उत्साह मंद होने पर कार्य में सफलता नहीं मिल सकती। उसी प्रकार जिस तरह गुनगुना पानी इंजन नहीं चला सकता, उसी प्रकार जब तक कोई व्यक्ति किसी कार्य में अपनी आत्मा को सम्पूर्ण रूप से नहीं लगा देता, अपनी सम्पूर्ण जीवन-शक्ति को किसी कार्य में नहीं देता तब तक उसे किसी भी प्रकार की सफलता अथवा उपलब्धि की आशा नहीं करनी चाहिए। महान बनने वाले इंसान कहीं न कहीं औरों को प्रेरित करने के लिए, कुछ करने के लिए कार्य में अपनी समस्त शक्ति नियोजित कर देते हैं। कुछ बनने के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं कि आपकी इच्छा वैसा बनने की हो। उसके लिए आपको अपनी समग्र शक्ति को एकत्र करके एक लक्ष्य पर केंद्रित करना होगा। हर व्यक्ति को अधिकार प्राप्त है कि वह जिस वस्तु को चाहे, उसकी इच्छा करे लेकिन उसे प्राप्त वही कर पाता है जिसका शारीरिक एवं मानसिक संतुलन सही हो।

केवल इच्छा मात्र से ही कुछ नहीं हो सकता। इच्छा करना और कर्म करने में आकाश-पाताल का अंतर है। इच्छा गुनगुना पानी है जो जीवन की गाड़ी को लक्ष्य तक नहीं पहुंचा सकती। लेकिन वही गुनगुना पानी जब 212 डिग्री पर गर्म होकर खौलने लगता है यानी आप अपने उद्देश्य के प्रति समग्र शक्ति लगाकर प्रयत्न करने लगते हैं तो आपकी गाड़ी अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुंच जायेगी।

जो जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, यदि आपके जीवन का उद्देश्य महान है तो आपको उसे सर्वोपरि रखना चाहिए तथा उसकी तुलना में सभी इच्छायें तुच्छ हो जानी चाहिए। ध्यान रहे कि जीवन का उद्देश्य आपका सर्वश्रेष्ठ सिद्धांत होना चाहिए। जीवन में उसकी सत्ता सर्वोपरि होनी चाहिए। ऐसा होने पर ही आपकी शक्ति बढ़ सकेगी और परिणामतः आपके जीवन की गाड़ी बढ़ती जायेगी। जो भी व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को निश्चित कर लेता और उसके लिए सदा उत्साहित बना रहता है, उसमें एक ऐसी शक्ति पैदा हो जाती है जिसे रचनात्मक, क्रियात्मक अथवा निर्माणात्मक सृजन शक्ति कह सकते हैं। ऐसा कर्मठ व्यक्ति ही श्रेष्ठ बन पाता है। लक्ष्य के बिना, कोई उद्देश्य के बिना व्यक्ति मौलिक अथवा रचनात्मक कर्ता नहीं बन सकता। और जब तक व्यक्ति एकनिष्ठ होकर अपने मन को किसी एक बिंदु पर एकाग्र नहीं करता तब तक उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता और न ही अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है।

अतः व्यक्ति को चाहिए कि वो अपने काम-धन्धे को ठीक वैसा ही रखे जैसा एक कलाकार अपनी सर्वोत्तम कृति को अपनी ही प्रतिमूर्ति समझता है और उसके विषय में बातचीत करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। जितनी संतुष्टि इस बात से होती है, उतनी अन्य किसी बात से नहीं होती। परंतु खेद की बात है कि अनेक लोगों को अपने पेशे में तनिक भी रुचि नहीं होती और बड़ी सरलता से उन्हें उस धन्धे से अलग किया जा सकता है। ऐसे अनेक नवयुवक हैं जो अपने पेशे या धन्धे में ठीक प्रकार से कार्य करते दिखते हैं परंतु उन्हें कभी भी किसी अन्य काम-धन्धे में लगाने के लिए भड़काया जा सकता है। इसका कारण यही है कि वह हर समय उसी दुविधा में पड़े रहते हैं कि जिस कार्य में लगे हुए हैं क्या वह ठीक है? क्या वह उसमें लगकर लाभ उठा सकते हैं? नहीं ना! आप सोचें, आप जो कर रहे हैं वो सम्पूर्ण शक्तियों को एकत्र कर लगन से, रुचि से कर रहे हैं, अगर हाँ है तो सफलता मिलनी निश्चित है।

'मेरा' कहने के बजाय कहो 'मेरा बाबा'

अवतार जो आते हैं वो मैसेज देते हैं, धर्म पिताओं को अवतार कहते हैं, वो क्यों आते हैं? दुनिया को गॉड का मैसेज देने के लिए। हमारा तन भी अभी इसीलिए है। ये तन भी बाबा का है, बाबा ने हमको सेवा में यूज़ करने के लिए दिया है। इसलिए हम भी अपने को चलते-फिरते अवतार समझें। ऐसी स्थिति होगी तो अटैचमेंट नहीं होगी। पहले है देह, जब देह में अटैचमेंट होती है तो देह के साथ ही देह के सम्बन्ध हैं। अगर देह ही नहीं तो न देह में, न सम्बन्ध में, न देह के पदार्थों में किसी में भी अटैचमेंट व आकर्षण न हो। तो हम अपने को मैसेन्जर समझें। बाबा ने यह शरीर अमानत के रूप में दिया है। मेरा नहीं है। जहाँ मेरापन आता है वहाँ पाँच विकार प्रकट हो जाते हैं। माया के आने का दरवाज़ा 'मेरा' है, माया को भगाने का फाटक है 'तेरा'। तो चेक करें कि सारे दिन में मेरा शब्द कितने बार कहते हैं? बाबा ने देखा कि इन्हों को मेरा-मेरा कहने की आदत पक्की है, इसलिए कहा कि मेरा कहने के बजाय कहो मेरा बाबा। बाबा का हमसे इतना प्यार है जो बाबा हमको मेहनत नहीं कराना चाहते। एक मेरा में सब मेरा आ जाता है। इसमें सब समाया हुआ है। दुनिया में चाहिए क्या? एक सम्बन्ध चाहिए, दूसरा सम्पत्ति चाहिए। हमारा सम्बन्ध एक के साथ है। अलग-अलग सम्बन्ध निभाना मुश्किल होता है। एक को याद करना सहज है। बाबा ने इतना सहज बना दिया, बस मेरा बाबा। तो सर्व सम्बन्ध उसमें हैं ही। और खज़ाने भी बाबा ने कितने दिए हैं! कोई भी खज़ाना हो, कोई भी अच्छी चीज़ हो, लेकिन यूज़ क्यों करना चाहते हैं? क्योंकि उससे हमें सुख मिलेगा, खुशी मिलेगी, शान्ति मिलेगी, इसलिए यूज़ करते हैं। लेकिन अविनाशी सुख, शांति, सम्पत्ति बाबा से ही मिलेगी। इसलिए बाबा कहते हैं दिल से कहो मेरा बाबा। दिल से कहेंगे तो कभी भी भूल नहीं सकते।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

चेक करें कि सारे दिन में मेरा शब्द कितने बार कहते हैं? बाबा ने देखा कि इन्हों को मेरा-मेरा कहने की आदत पक्की है, इसलिए कहा कि मेरा कहने के बजाय कहो 'मेरा बाबा'।

योग के टाइम देही-अभिमानी का अभ्यास करते फिर भी बार-बार देह अभिमानी क्यों हो जाते हैं? क्योंकि शरीर मेरा है, बहुत काल का अभ्यास है। इसलिए अपने को अवतार समझो, बाबा ने यह शरीर मैसेज देने के लिए दिया है तो देहभान रहेगा ही नहीं, अवतरित हुए हैं, काम किया और चले। निराकार बाप समान बनने के लिए हम ये दो विशेष अनुभव कर सकते हैं। आप जैसे हो, आपको कम्पनी भी ऐसी ही अच्छी लगेगी। चाहे मर्तबे में हो, चाहे ऑक्यूपेशन में हो, चाहे स्वभाव-संस्कार में हो या दिल का प्यार हो तो समीप आते जायेंगे। वैसे भी फैमिली में 4-6 बच्चे हैं लेकिन फिर भी माँ का प्यार उस बच्चे से ज़्यादा होता जो स्वभाव-संस्कार में अच्छा हो। क्योंकि जो माँ चाहती है वो बच्चा करता है। तो समान हो गया इसलिए समीप है। इसी रीति से हमको बाबा के समीप आना है तो उसका आधार है समान बनना। निराकार के रूप से तो हम इसी रीति से समान बन सकते हैं।

साकार में हमारे सामने ब्रह्मा बाबा है। जैसे हम जन्म-मरण के चक्कर में आते हैं वैसे ब्रह्मा बाबा भी 84 जन्म लेते हैं। तो उनके समान बनने के लिए हमें मन्सा-वाचा-कर्मणा में पूरा फॉलो करना है।

पुकारना अथवा मांगना भक्ति के संस्कार हैं - ब्राह्मणों के नहीं

अब हम ब्राह्मणों की वह अवस्था चाहिए कि पाना था जो पा लिया ... जब हम इस स्थिति में पहुंच जाते हैं तो मांगना समाप्त हो जाता है। बाप से बच्चों को मांगने की दरकार नहीं रहती। वह आपेही देता है। बाबा कई बार हम बच्चों को अमृतवेले का रमणीक दृश्य सुनाते कि - सवेरे-सवेरे बच्चे बाप से मांगते हैं, क्या-क्या उलहने देते हैं? अगर साक्षी होकर देखो तो आपको भी मजा आयेगा। साथ-साथ बाबा यह भी कहते - बच्चे तुम्हें जो भी प्राप्ति करनी है, जिस भी सम्बन्ध का रस लेना है वह अमृतवेले बाप से ले सकते हो, क्योंकि उस समय बाप भोलानाथ के रूप में होते हैं। यह किन के लिए कहा? जिन बच्चों को बाबा देखता यह तृप्त नहीं हैं तो बुद्धि औरों में न जाए इसलिए कहता मेरे से ही लो। लेकिन मांगना ब्राह्मणों का धर्म नहीं। यह तो भक्ति के संस्कार हैं।

जब कोई तबियत के कारण या कोई कमी के कारण डिस्टर्ब होकर कहते हैं- हे बाबा, ओ बाबा... तो बाबा के महावाक्य हैं तुम तो भगवान के बच्चे हो। तुम्हारे मुख से कभी भी हाय-हाय नहीं निकल सकता। बाप हम बच्चों के यह हाय-हाय के बोल सुन नहीं सकते। जब बाप और ड्रामा में निश्चय है तो फिर हाय-हाय के बोल मुख से क्यों निकलते हैं।

हे बाबा कहना भी हमारी पुकार के बोल हैं। पुकार का बोल, भक्ति का, प्रार्थना का, मांगने का है। यह शक्तिहीन का शब्द है। यह पुकारना भी भक्ति की आदत है। बाबा ने हमारे सब पुराने संस्कार मिटाये हैं इसलिए बाबा को यह शब्द भी पसंद नहीं है। बच्चे कहें बाबा मैं क्या करूं, मेरे में शक्ति नहीं है। बाबा हमें राजाओं का राजा बनाते हैं, फिर हम नीची स्थिति में क्यों आते हैं!

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

ममा हमेशा अपनी अथॉरिटी में रहती थी। मैं जगदम्बा हूँ यह अथॉरिटी थी। मैं भी जितना अथॉरिटी में रहूंगी उतना मुझे ऑटोमेटिक मिलेगा। मैं हे कहकर अपने को नीचे क्यों लाऊं!

हमने कभी भी ममा के मुख से यह नहीं सुना कि बाबा करायेगा, बाबा शक्ति देगा क्यों? क्योंकि ममा हमेशा अपनी अथॉरिटी में रहती थी। मैं जगदम्बा हूँ यह अथॉरिटी थी। मैं भी जितना अथॉरिटी में रहूंगी उतना मुझे ऑटोमेटिक मिलेगा। मैं हे कहकर अपने को नीचे क्यों लाऊं! हे बाबा, यह मेरे संस्कार हैं! ऐसा कहना भी देह अभिमान है। जैसे अपने आप से बेचैन होकर यह शब्द बोलते। ओहो बाबा! यह एक दिन की खुशी के बोल हैं। जब यह बोल निकलते कि हाय मैं क्या करूं - तो सिद्ध होता है कि बाबा ने मुझे भरपूर नहीं किया है। हाय-हाय कहकर मैं अपनी कमज़ोरी नहीं मिटा सकती। निश्चय अटूट हो तो नशे में सदा झूमते रहेंगे।

कोई भी पेपर आये - मैं हाय क्यों कहूँ! हाय कहना, यह भी शिवबाबा की इनसल्ट करना है। यह परिस्थितियों का चक्र है। मुझे इस चक्र से पार होना है।

अपने में इतनी शक्ति भर लें जो कोई भी कर्मेन्द्रिय खींचे नहीं...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

पहले है आज्ञाकारी। छोटा बच्चा भी आज्ञाकारी मीठा लगता है। आनाकानी करने वाला, न आज्ञा मानने वाला अच्छा नहीं लगता। लगता है इसकी नेचर ज़िद्दी हो जायेगी, अपनी मनमानी करेगा। आज्ञाकारी बनने में बड़ा सुख है। हमारे मात-पिता ऊंचे ते ऊंच भगवन हमारे कल्याण के लिये जो आज्ञा करते हैं, समझदार बनकर मुझे आज्ञाकारी बनना है। आज्ञाकारी बनने से फिर वफादार बनते हैं। बाबा के साथ सर्व सम्बन्धों में वफादार। कभी भूल से ख्याल भी न आये कि छोड़ कर कहीं चला जाऊं। ख्याल आना भी बड़ी भूल है। बाप को छोड़ने का, कहीं जाने का ख्याल आया तो फिर पढ़ाई से दिल नहीं लगेगी। वह ख्याल घड़ी-घड़ी तंग करेगा। फिर किसी के साथ स्वभाव का टक्कर हुआ तो छोड़ेंगे बाबा को। जिन्होंने बाबा को छोड़ा है, उनको बाबा ने कुछ कहा नहीं है, कहा किसी और ने और छोड़ते हैं बाबा को। तो हमारी नेचर छुई-मुई वाली, मुरझाने वाली न हो। जो जल्दी मुरझाते हैं उसमें शक्ति नहीं होती है। याद में रहने का रस नहीं है। देही अभिमानी स्थिति में कितना सुख है, अगर इसका रस बैठा हुआ हो तो जल्दी ही देह से न्यारे हो जायेंगे, आत्म दृष्टि से औरों को देखेंगे। किसने ऐसा कुछ कहा तो एक कान से सुना दूसरे से निकाल दिया। जैसे सुना ही नहीं। सबके गुण देखेंगे। अच्छी चीज़ देख ली, न काम की चीज़ छोड़ दी। देही अभिमानी बनने से हमारी क्वालिटी हंस वाली बन जाती है। परखने की शक्ति अच्छी आती है। रत्न ले लिया, कंकड़ फेंक दिया। देही अभिमानी बनने से बाबा से सर्व शक्तियां खींच सकते हैं। देही अभिमानी बनने से हमारी बुद्धि शुद्ध पवित्र बन जाती है।

बाबा से शक्तियां खींचने के लिए बुद्धि शुद्ध चाहिए। अशुद्ध संकल्प, शक्ति को खत्म करते हैं। हमारे अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्तियां हैं। देहभान को छोड़ने से जो शक्ति पैदा होती है, उससे मन, कर्मेन्द्रियां कंट्रोल में आ जाती हैं। मन कर्मेन्द्रियों के वश नहीं रहता है। मन कर्मेन्द्रियों के वश में रहने से गुलाम बन जाते हैं। गुलाम सदा दुःखी होता है। जो भी गुलाम है तो गुलाम को दुःख ज़रूर होता है। वह समझता है मैं अंडर हूँ, मुझे दबा कर चला रहे हैं, तो दुःख होता है। बहुत काल से माया ने दबाकर जो दुःखी बनाया है वो दुःख जाता नहीं है। और डर है फिर से माया आ न जाये, माया दबा न दे। लेकिन आत्म अभिमानी स्थिति से जो शक्ति आती है उससे हम निडर बन जाते हैं। मन कर्मेन्द्रियों के जैसे राजा बन जाते हैं।

तो पहले अपने में शक्ति भर लो जो कर्मेन्द्रिय खींचे नहीं। मन कभी चंचल न बने। इधर-उधर भटके नहीं। अभ्यास करके अन्दर यह शक्ति भर लो।